दैनिक
नवयत्न
केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए स्वीकृत
RNI No. RAJHIN/2010/31619
Post.Reg No. sikar/041/2010-2012
खबरें सड़क से संसद तक
वर्ष: 13 अंक: 284 रविवार, बुधवार 09 नवम्बर 2022 Email : navyatndainik@gmail.com मूल्य 1 रुपया पृष्ठ 8

डीएसटी-एसईआरबी कार्यशाला का शुभारम्भ

15 दिवसीय कार्यशाला में दिया जाएगा उच्च स्तरीय प्रशिक्षण

सिंह

पिलानी (नवयत्न)। भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड के सौजन्य से सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में मंगलवार को एसआईएस सीरी पिलानी के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया कि अध्यक्षता में उच्च स्तरीय कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया।

संस्थान के हिंदी भाषा अधिकारी एवं जनसंपर्क अधिकारी रमेश चौरा ने बताया कि कार्यशाला में देशभर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों से एम टेक एवं पी एच डी कर रहे कुल 25 प्रतिभागियों का चयन किया गया है। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में इन प्रतिभागियों को सेमिकंडक्टर डिवाइस फैब्रिकेशन विषय पर विद्वान वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, इंजीनियरों तथा एवं विशेषज्ञ शिक्षाविदों द्वारा विषय केंद्रित प्रशिक्षण दिया जायगा। सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 8 से 22 नवंबर तक आयोजित किए जा रहे इस गहन एवं महत्वाकांक्षी प्रशिक्षण कार्यक्रम को भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत सेवारत संस्थान (साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड-एसईआरबी) द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारम्भ परंपरागत रूप से सरस्वती वंदना से हुआ। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-सीरी के निदेशक डॉ पी सी पंचारिया ने की। विदित है कि सीएसआईआर-सीरी ने सेमिकंडक्टर इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित की हैं और संस्थान में सेमिकंडक्टर्स की विशेषज्ञ जनशक्ति और अत्याधुनिक शोध सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। इसीलिए डीएसटी द्वारा संस्थान को इस उच्च स्तरीय प्रशिक्षण के लिए चुना गया है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य एम टेक एवं पीएचडी शोध छात्रों को सेमिकंडक्टर डिवाइस फैब्रिकेशन पर विषय केंद्रित ज्ञानदान एवं प्रशिक्षण देते हुए उन्हें इस विषय की अत्याधुनिक जानकारी देते हुए देश के लिए नवीन विशेषज्ञ तैयार करना है। कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे मुख्य वक्ता डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने सभी अतिथियों, संकाय सदस्यों व प्रतिभागियों का औपचारिक स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी अतिथियों व प्रतिभागियों को देश में सीरी सहित सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की स्थापना की पृष्ठभूमि सहित संस्थान के प्रमुख शोध क्षेत्रों से अवगत कराया। उन्होंने देश में अंतर्विषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) शोध को आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि कोई भी प्रौद्योगिकी अकेले सफलता प्राप्त नहीं कर सकती बल्कि एक पूर्ण उत्पाद के रूप में सामने आने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की एक से अधिक शाखाओं को साथ मिलकर कार्य करना पड़ता है। इसके लिए उन्होंने संस्थान की शोध गतिविधियों का उदाहरण भी दिया। उन्होंने कहा कि देश में सेमिकंडक्टर क्रांति की शुरुआत हो चुकी है।

अंत में उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रशिक्षार्थी संस्थान की वैज्ञानिक एवं तकनीकी जनशक्ति की विशेषज्ञता का लाभ उठाएंगे और देश में सेमिकंडक्टर क्रांति में अपना यथासंभव योगदान देंगे। चौरा ने बताया कि इस अवसर पर अपने संबोधन में संस्थान में शोध सुविधाओं के प्रमुख अशोक चौहान, प्रधान वैज्ञानिक ने सीएसआईआर-सीरी की शोध सुविधाओं की जानकारी देते हुए बताया कि संस्थान में सेमिकंडक्टर शोध प्रयोगशाला की शुरुआत वर्ष 1979 में हुई। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रशिक्षार्थी इस 15-दिवसीय कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ विजय चटर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने डीएसटी-सर्व द्वारा आरम्भ की गई। इस पहल की जानकारी देते हुए प्रतिभागियों को इस 15-दिवसीय गहन कार्यशाला को सर्वांगीण रूपरेखा से अवगत कराया। इस अवसर पर उन्होंने इस आयोजन की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि हम अपने उद्देश्यों में तभी सफल होंगे जब सभी प्रतिभागी पूरी निष्ठा व तन्मयता से इस कार्यक्रम में प्रतिभागिता करेंगे।

उद्घाटन सत्र के अंत में डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए देश में ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शिल्प की भी उल्लेख किया। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ अदिति ने किया। चौरा ने जानकारी देते हुए बताया कि एसईआरबी (सर्व) साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड (एस ई आर बी) का गठन भारत सरकार द्वारा देश में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में मौलिक अनुसंधान को बढ़ाने के लिए संसद के अधिनियम साइंस एंड इंजीनियरिंग रिसर्च बोर्ड अधिनियम, 2008 द्वारा किया गया है। यह भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के अधीन है।